

134

6

श्री ३ प्र

अथ कर्मिण्यस्य वसिष्ठऋषिः रूद्रो देवता
विराट् ब्राह्मी त्रिष्टुप् ध्रुवः धैवतः स्वरः
आयुर्वर्द्ध्यर्चे विनियोगः

आयुषमिण्यस्य नागयणऋषिः रूद्रो देवता
उष्णिक् ध्रुवः ऋषभः स्वरः ऋषभः
स्वरः दीर्घायुः प्राण्यर्चे विनियोगः

यतो यतः समीहसे ततो नो०

अथ प्राचमनम्
श्रीं अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा १
श्रीं अमृताविधानमसि स्वाहा २
श्रीं सत्यं यशः श्रीमयि श्रीः स्वाहा ३

अथाङ्गस्पर्शः

श्रीं वायुं आस्येऽसु
श्रीं नसे मे प्राणिऽसु
श्रीं अक्षणे मे वक्षुऽसु
श्रीं कर्णयो मे श्रोत्रमसु
श्रीं वाहो मे वलमसु
श्रीं उवो मे श्रोत्रोऽसु
श्रीं अरिष्टानि मे हानि तनूस्तन्या मे
सह संतु ॥ स्तेन दक्षिण हस्तेन जलमादय
सर्वे हिंसे मर्जयेत् वातिक समिधो वेद्यां
चिनुयात्

ओं भूर्भुवः स्वः अनेन पात्रेऽग्निमा
 दाय ओं भूर्भुवः स्वः स्वर्गैरिव भू-
 म्ना पृथिवीव अग्निमा ॥ तस्यास्ते पृथि-
 वि देवयजनि पृष्ठेऽग्निमन्ता दमन्ता द्या-
 याँ दधे १ य० अ० ३ मं० ५ अनेनाग्निं
 प्रतिष्ठाप्य तत्रोपरि समिधः प्रक्षिप्य
 कर्पूरं निक्षिप्य अजनेन प्रदीपयेत्
 वक्ष्यमाणमन्त्रेण ओं उदुधस्वाग्ने-
 प्रति जाग्रहि त्वमिष्टापूर्ते स ७ सजेथा
 मयञ्च । अस्मिन्सधस्ये ८ पुनरस्मिन्
 विश्वे देवा यजमानश्च सीदत य० अ० १५
 मं० ५४ अथ चन्दनस्य पलाशास्य
 वासामित्रयं प्रष्टाहुतं घृताक्तं (विधाय
 एकैकमादाय वक्ष्यमाणमन्त्रेण जुह्यात्
 ओं अथ तं इध्मा आत्मा जातवेदस्ते-
 नेध्यस्व वर्धस्व चेद्ध वर्धय वास्मान्
 प्रजया पशुभिर्वृक्षवर्चसेभ्यो जायेत
 समेधय स्वाहा ॥ इदमग्नये जातवेदसे
 इदममम ॥ १ ॥ अनेनैकां समिधम्
 ओं समिधाग्निं दुवस्पत घृतेर्वेधयेता-
 तिष्ठिम् । आस्मिन् हव्या जुहोतन स्वाहा
 इदमग्नये इदममम ॥ २ ॥ अनेनैकां तृणा
 सुसमिद्धाक्षो विषे घृतं तीव्रं जुहोतन । अनेन
 ये जातवेदसे इदममम ॥ ३ ॥ अनेन द्वितीया
 स्वाहा इदमग्नये १

तन्वा समिद्धिरङ्गि ते घृतेन वर्द्धया मसि ।
 वहस्यो वायविष्य स्वाहा ॥ इदमग्नये
 द्विं रसे इदममम ॥ ४ ॥ य० अ० ३ मं० १२ । ३
 अनेन तृतीयां अथ वक्ष्यमाणमन्त्रेण
 पञ्चाग्राहुतीर्दधात् ओम् अथ न्त इ-
 ध्मा आत्मा जातवेदस्तेनेध्यस्व वर्धस्व वेद्ध
 वर्द्धय वास्मान् प्रजया पशुभिर्वृक्षवर्च-
 सेना न्नायेत समेधय स्वाहा ॥ इदमग्नये
 जातवेदसे इदममम ॥ १ ॥ ततो अलिं
 जतपूर्णं विधाय वेद्याः प्राग्दिशि वक्ष-
 यमाणमन्त्रेण क्षिपेत् ओम् अदितेऽश्र-
 नुमन्यस्व ॥ ओम् अनुमतेऽनुमन्यस्व ॥
 अनेन पश्चिमे ओं सदस्वत्यनुमन्यस्व ॥
 अनेनोत्तरे ओं देवसवितः प्रसुवयसं
 प्रसुवयसपतिं भगाय । दिव्यो गन्धर्वः
 केतपूः केतं नः पुनातु वाचस्पतिर्वचि-
 नः स्वदत् ॥ य० अ० ३० मं० १ ॥ अनेन वे-
 द्याश्चतुर्दिक्षु जलांजलिं क्षिपेत् ततो हु-
 ष्मनामिका मध्यमाभिः सुर्वेणा घृतपात्राद्
 तमादाय ओम् अग्नये स्वाहा ॥ इदमग्नये
 इदममम ॥ अनेन वेद्या उत्तरभागे
 ओं सोमाय स्वाहा ॥ इदं सोमाय इदममम ॥
 अनेन वेद्या दक्षिणे प्रवर्तितसमितु घृतं जुह्यात्
 ओं प्रजापतये स्वाहा ॥ इदं प्रजापतये इदममम
 ओम् इन्द्राय स्वाहा ॥ इदं मिन्द्राय इदममम ॥
 आभ्यामध्वे ततोऽग्निहोत्रमन्त्राः

प्रातः कालीनाः

श्रीं सूर्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा १
श्रीं सूर्योर्वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा २
श्रीं ज्योतिः सूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा ३
श्रीं सन्नूदेवेन सवित्वा सन्नूखसेन्द्रवत्पा-
नुषाणाः सूर्यो वेतु स्वाहा ४

अथ सायंकालीनाः

श्रीं अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिराग्निः स्वाहा १
श्रीं अग्निर्वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा २
श्रीं अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिराग्निः स्वाहा ३
इमं मनसु चार्च्यं तृतीयां प्र
श्रीं सन्नूदेवेन सवित्वा सन्नूखसेन्द्र-
वत्पां नुषाणो अग्निर्वेतु स्वाहा ४

अथोभयकालीनाः

श्रीं भूरज्योतिर्वायवा स्वाहा इन्द्रमन्ये
प्राणाय इन्द्रमम १ श्रीं भुवर्वायवे
पांशाय स्वाहा इन्द्राय वे पानाय इन्द्रमम २
श्रीं स्वरादिभ्यो ज्ञानाय स्वाहा इन्द्रादि-
भ्यो इन्द्रमम ३ श्रीं भूर्भुवः स्वराणि
वाय्वाऽऽदित्येभ्यः प्राणायानज्यानेभ्यः
स्वाहा ॥ इन्द्रमग्निवाय्वाऽऽदित्येभ्यः प्रा-
णायानज्यानेभ्यः इन्द्रमम ४ श्रीं सा-
वे ज्योतीरसोऽमृतं मूत्रं भूभुवः स्वरोम
स्वाहा ५ श्रीं यामेधो देवगणाः
पितरश्चोपासते । तयामाप्रधमेधया
जिमेध्यावितं कुरु स्वाहा ६ मं० प्र० ३२

मं० १४ श्रीं विश्वानि देव सवितुर्दृष्टि-
तानि परासुवा । पद्मं दंतं न आसुव स्वाहा
७ मं० प्र० ३० मं० ३ प्रज्जेनय सुपथा
राये अस्मान् विश्वानि देव वपुनानि वि-
द्वान् युयोध्वस्म जुहुराणामेनो भूयि-
ष्याते नम उर्क्तिं विधेम स्वाहा ८ मं०
प्र० ४० मं० १६ एभि रष्याहतीः प्रदाय
श्रीं सर्वम्वै पूरां स्वाहा अनेन वि-
चारं प्राहुति त्रयं दद्यात्

इत्यग्नि होत्रैर्विधिः सस्ते पतः समाप्तः
सं० १४४३ भाद्र० शुक्ल प्रतिपदि सोमे

उक्त वर्णों में प्रवर्ण के वर्ण प्रकार प्रादि
स्वर और कवर्ण प्रादि वर्णों के वर्ण
अंजन कहते हैं स्वर वर्ण शब्दों में

शुद्ध स्वरूप से भी रहते और अंजनों के साथ मात्रा
रूप से भी आते हैं मात्रा रूप स्वरों में जब अंजन
मिलाने जाते हैं तब प्रत्येक अंजन चारह प्रकार का
कहा जाता है (उसका स्वरूप और संयोग चक्र
जिससे कि अंजनों का परस्पर संबंध विदित हो
ता है) आगे लिखते हैं

चारह प्रकार का स्वरूप और संयोग चक्र

| | | | | | | | | | | | |
|-------------|--------------|-------|----|---------|----|----|----|----|----|----|----|
| क | क | क | क | क | क | क | क | क | क | क | क |
| अ | आ | इ | ई | उ | ऊ | ए | ऐ | ओ | औ | अं | अः |
| र | रा | रि | री | रु | रू | रे | रै | रो | रौ | रं | रः |
| क | का | कि | की | कु | कू | के | कै | को | कौ | कं | कः |
| ह्रस्व अ | ह्रस्व लृ | कषम | | जमम | | | | | | | |
| क-अ | क-लृ | क-वम | | ह्र-अ | | | | | | | |
| दीर्घ | क-अ | कषम | | ह्र-अ | | | | | | | |
| रह | क | ध | | श व म ण | | | | | | | |
| क-अ | क-अ | तरम | | इत्यादि | | | | | | | |
| क | क | त्र-न | | अनना | | | | | | | |